AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में परिणाम आधारित शिक्षा की भूमिका

ORIGINAL ARTICLE

Authors

परविंद कुमार वर्मा
सहायक आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
प्रयागराज, उत्तरप्रदेश, भारत

एवं

डॉ. दिनेश सिंह
सह आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
प्रयागराज, उत्तरप्रदेश, भारत

शोध सार

परिणाम–आधारित शिक्षा वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के ढांचे के भीतर महत्वपूर्ण ध्यान आकर्षित कर रही है। यह नीति, जो भारत में शिक्षा प्रणाली में क्रांति लाने के लिए एक रोडमैप के रूप में कार्य करती है, शैक्षिक प्रक्रिया पर सीखने के परिणामों को प्राथमिकता देने के महत्व को रेखांकित करती है। केवल शिक्षा प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, NEP 2020 विशिष्ट सीखने के परिणामों को प्राप्त करने के महत्व पर जोर देती है। परिणाम–आधारित शिक्षा (OBE) यह सुनिश्चित करने का प्रयास करती है कि छात्र न केवल ज्ञान प्राप्त करें बल्कि वास्तविक दुनिया में पनपने के लिए आवश्यक कौशल और दक्षता भी विकसित करें। NEP 2020 स्वीकार करता है कि पारंपरिक शिक्षा प्रणालियों की अक्सर रटने और सैद्धांतिक सीखने पर बहुत अधिक जोर देने के लिए आलोचना की जाती है, जो छात्रों को व्यावहारिक अनुप्रयोगों या कार्यबल की मांगों के लिए पर्याप्त रूप से तैयार नहीं कर सकता है। वांछित शैक्षिक परिणामों या उद्देश्यों को प्राथमिकता देकर, परिणाम–आधारित शिक्षा का उद्देश्य इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षण विधियों, आंकलन और पाठ्यक्रमों को संरेखित करना है। परिणाम–आधारित शिक्षा का एक प्रमुख लाभ यह है कि यह शिक्षा और रोजगार के बीच की खाई को पाटने की क्षमता रखती है, क्योंकि यह कौशल और दक्षताओं को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करती है, जिनकी नौकरी के बाजार में अत्यधिक मांग है। यह एनईपी 2020 के व्यापक उद्देश्य के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य देश की उन्नति और समृद्धि में योगदान देने में सक्षम कुशल और अनुकूलनीय कार्यबल तैयार करना है।

मुख्य शब्द

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, परिणाम आधारित शिक्षा, शिक्षा, उन्नति, समृद्धि.

प्रस्तवाना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 भारत में शिक्षा प्रणाली में बदलाव लाने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है। उच्च शिक्षा में, परिणाम–आधारित शिक्षा (Outcome Base Education) नीति के उद्देश्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह छात्र–केंद्रित दृष्टिकोण सीखने पर केंद्रित है, जो प्रासंगिक कौशल और ज्ञान के अधिग्रहण

पर जोर देता है। OBE एक अधिक एकीकृत और समग्र शिक्षा प्रणाली बनाने में मदद कर सकता है जो छात्रों को 21वीं सदी की चुनौतियों के लिए बेहतर ढंग से तैयार करता है। OBE की विशेषता यह है कि यह शिक्षा के पारंपरिक दृष्टिकोण से हटकर छात्रों के सीखने के परिणामों पर केंद्रित होता है। इसमें छात्रों के ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और मूल्यों के विकास पर जोर दिया जाता है, जो उन्हें न केवल अकादमिक उत्कृष्टता प्राप्त करने में बल्कि व्यावहारिक जीवन में भी सफल होने में मदद करता है। एनईपी 2020 के तहत, OBE को अपनाने का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि शिक्षा केवल परीक्षा–उन्मुख न हो बल्कि छात्रों के समग्र विकास को भी प्रोत्साहित करे। इसके अलावा, OBE छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं और उनकी सीखने की गति को ध्यान में रखते हुए उन्हें एक सशक्त और समावेशी शिक्षा प्रदान करता है। यह छात्रों को अपने लक्ष्यों को पहचानने, उन्हें प्राप्त करने की योजना बनाने और अपने सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी निभाने के लिए प्रेरित करता है। इससे छात्रों में आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास और समस्या–समाधान की क्षमता का विकास होता है, जो उन्हें भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करता है। OBE का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह शिक्षकों को भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करता है। शिक्षकों को छात्रों के लिए उपयुक्त शिक्षण विधियों का चयन करने, उनकी प्रगति का मूल्यांकन करने और उन्हें आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए सक्षम होना चाहिए। यह शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और परिणाममूलक बनाता है। एनईपी 2020 और OBE के समन्वय से भारत की शिक्षा प्रणाली में एक व्यापक परिवर्तन की उम्मीद की जा सकती है। इससे न केवल छात्रों की शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार होगा बल्कि उनके नैतिक और सामाजिक मूल्यों का भी विकास होगा। यह नीति एक सशक्त, सक्षम और समग्र शिक्षा प्रणाली की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो भारत को एक ज्ञान–आधारित समाज के रूप में उभरने में मदद करेगा।

ओबीई के तहत, शिक्षा को निम्नलिखित स्तंभों पर आधारित किया जाएगाः

- **स्पष्ट शिक्षण उद्देश्यः** प्रत्येक पाठ्यक्रम और विषय के लिए स्पष्ट और मापने योग्य शिक्षण उद्देश्य निर्धारित किए जाएंगे।
- **विविध मूल्यांकनः** छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन विभिन्न तरीकों से किया जाएगा, जिसमें परीक्षाएं, प्रोजेक्ट, कार्य और सहकर्मी मूल्यांकन शामिल हैं।
- **निरंतर प्रतिक्रियाः** छात्रों को उनकी प्रगति पर नियमित प्रतिक्रिया प्रदान की जाएगी ताकि वे अपनी सीखने की रणनीति में सुधार कर सकें।
- **कौशल विकासः** शिक्षा छात्रों को 21वीं सदी में आवश्यक कौशल विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करेगी, जैसे कि महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मकता, समस्या समाधान और संचार।

ओबीई लाभ

- **छात्रों की व्यस्तता और प्रेरणा में वृद्धिः** जब छात्रों को पता होता है कि उनसे क्या अपेक्षा की जा रही है और उन्हें अपनी प्रगति पर प्रतिक्रिया मिल रही है, तो वे अधिक व्यस्त और प्रेरित होते हैं।
- **बेहतर सीखने के परिणामः** अध्ययनों से पता चला है कि ओबीई वाले छात्र पारंपरिक शिक्षा प्रणालियों वाले छात्रों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन करते हैं।
- **जीवन कौशल का विकासः** ओबीई छात्रों को उन कौशलों को विकसित करने में मदद करता है जो उन्हें जीवन में सफल होने के लिए आवश्यक हैं।
- **शिक्षकों के लिए बेहतर समर्थनः** ओबीई शिक्षकों को अपने छात्रों को प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए आवश्यक उपकरण और संसाधन प्रदान करता है।

ओबीई को लागू करने से चुनौतियां

- **पाठ्यक्रम और मूल्यांकन प्रणाली का विकासः** स्पष्ट और मापने योग्य शिक्षण उद्देश्यों के साथ पाठ्यक्रम और मूल्यांकन प्रणाली विकसित करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो सकता है।

- **शिक्षक प्रशिक्षणः** शिक्षकों को ओबीई के सिद्धांतों और प्रथाओं को सिखाने के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता होगी।
- **संसाधनों की आवश्यकताः** ओबीई को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए अतिरिक्त संसाधनों की आवश्यकता हो सकती है, जैसे कि प्रौद्योगिकी और मूल्यांकन उपकरण।

सीखने के परिणामों पर प्रवचन का इतिहास

राष्ट्रीय स्तर पर

''सीखने के परिणामों'' की अवधारणा वर्ष 2000 के बाद तक नीति दस्तावेजों में आमतौर पर इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द नहीं था। हालाँकि, 1966 में, कोठारी आयोग की रिपोर्ट ने अधिक सामान्य अर्थों में परिणामों के महत्व पर चर्चा की, जैसे कि शिक्षा कैसे मदद कर सकती है लोकतांत्रिक और जागरूक नागरिक, जिसे एक शैक्षिक उद्देश्य माना जा सकता है। फिर 1968 में, शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति ने इस बात पर जोर दिया कि छात्रों का मूल्यांकन करते समय केवल एक विशिष्ट समय पर उनके प्रदर्शन को प्रमाणित करने के बजाय, उनकी उपलब्धि और सुधार के स्तर पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। फिर भी, इस नीति में उपलब्धि के इस स्तर को परिणाम के रूप में कैसे समझा जाए, इस पर अधिक विवरण नहीं दिया गया है। बाद में 1986 में, शिक्षा नीति ने सीखने के न्यूनतम स्तर के महत्व पर प्रकाश डाला, जो स्कूलों में शिक्षण और सीखने का एक प्रमुख पहलू बन गया (कौशिक, 2018)। एनसीईआरटी ने 2014 में ''प्राथमिक स्तर पर सीखने के संकेतक और सीखने के परिणाम'' नामक एक दस्तावेज विकसित किया था, जिसमें आठवीं कक्षा तक के लिए सीखने के संकेतक और पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाओं को सूचीबद्ध किया गया था। फरवरी 2017 में, शिक्षा का अधिकार अधिनियम में एक संशोधन ने सभी राज्यों के लिए विषय–वार और कक्षा–वार परिणाम तैयार करना अनिवार्य कर दिया। अप्रैल 2017 में , एनसीईआरटी ने ''प्रारंभिक चरण में सीखने के परिणाम'' की शुरुआत की, जिसमें विभिन्न विषयों के लिए कक्षा–वार विकसित किए जाने वाले अपेक्षित परिणामों को सूचीबद्ध किया गया। 2020 की शिक्षा नीति परिणाम–आधारित प्रवचन के लिए प्रतिबद्ध है, और सीखने के स्तर में गिरावट के दावों का समर्थन करने के लिए अक्सर एएसईआर और एनएएस रिपोर्ट का हवाला दिया जाता है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद बच्चों की सीखने की उपलब्धि को मापने और शिक्षा इनपुट के प्रभाव को समझने के लिए हर तीन साल में एनएएस आयोजित करती है। 2017 एनएएस ने सीखने के परिणामों पर ध्यान केंद्रित किया। सर्व शिक्षा अभियान–संयुक्त समीक्षा मिशन रिपोर्ट, वैश्विक निगरानी रिपोर्ट और अन्य स्रोत भी कम सीखने के स्तर का संकेत देते हैं।

वैश्विक स्तर पर

1990 के जोम्तिएन सम्मेलन के बाद, विकासशील देशों को अपने कार्यबल के लाभ के लिए और प्रथम विश्व के साथ बेहतर तालमेल के लिए अपनी प्राथमिक शिक्षा प्रणालियों के पुनर्गठन के लिए प्रोत्साहित किया गया। एक दशक के दौरान, मुख्य ध्यान नामांकन दर बढ़ाने पर था, जिसमें भारत ने पहुंच और समानता को प्राथमिकता दी (कौशिक, 2018, पृष्ठ 27)। 2000 में, देशों के प्रदर्शन का आंकलन करने के लिए सभी के लिए शिक्षा (ईएफए) संकेतकों का उपयोग किया गया था। हालाँकि, छात्र उपलब्धि और सीखने के परिणामों में प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए इस्तेमाल किए गए उपायों को संतोषजनक नहीं माना गया। यूनेस्को द्वारा प्रकाशित और विश्व शिक्षा मंच द्वारा अपनाए गए डकार फ्रेमवर्क ऑफ एक्शन ने मापने योग्य और मान्यता प्राप्त शिक्षण परिणामों को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कौशल, संख्यात्मकता और साक्षरता पर विशेष जोर देने के साथ शिक्षा गुणवत्ता के सभी पहलुओं को बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया। इस बदलाव ने पहुंच को प्राथमिकता देने से लेकर परिणामों को प्राथमिकता देने की दिशा में एक आंदोलन का संकेत दिया। 1997 में, आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) द्वारा अंतर्राष्ट्रीय छात्र मूल्यांकन कार्यक्रम (पीआईएसए) शुरू किया गया था, जिसका कार्यान्वयन 2000 में शुरू हुआ था। हर तीन साल में पीआईएसए रैंकिंग जारी करने से दुनिया भर का ध्यान आकर्षित हुआ है (गोरूर, 2016)। वैश्विक स्तर पर, विश्व शिक्षा मंच (यूनेस्को, विश्व बैंक, एशियाई विकास बैंक) और ओईसीडी जैसे संगठनों

ने परिणाम प्राप्त करने पर चर्चा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जैसा कि एनईपी 2020 में बताया गया है, शिक्षा के वैश्वीकरण और उच्च शिक्षा में परिणाम–आधारित शिक्षा ढांचे को अपनाने से शिक्षा प्रणाली पर कई प्रभाव पड़ते हैं। यह नीति उच्च शिक्षा में व्यावहारिक शिक्षा, नवाचार और रचनात्मकता को बढ़ावा देती है और छात्रों को वैश्विक कार्यबल के लिए तैयार करती है। एनईपी 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली को बदलने और इसे 21वीं सदी में अधिक प्रतिस्पर्धी और प्रासंगिक बनाने की दिशा में सही दिशा में एक कदम है। शिक्षा के वैश्वीकरण और एनईपी 2020 के परिणाम–आधारित शिक्षा ढांचे के उच्च शिक्षा के लिए कई निहितार्थ हैं। सबसे पहले, यह एक अधिक प्रतिस्पर्धी और गतिशील शिक्षण वातावरण बनाता है जो छात्रों को वैश्विक कार्यबल के लिए तैयार करता है। दूसरे, यह संस्थानों को नौकरी बाजार के लिए प्रासंगिक व्यावहारिक कौशल और दक्षता विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित करता है। तेजी से बदलते नौकरी बाजार के लिए छात्रों को तैयार करने में सैद्धांतिक ज्ञान से व्यावहारिक शिक्षा की ओर यह बदलाव महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में उल्लिखित उच्च शिक्षा में परिणाम–आधारित शिक्षा ढांचे को अपनाना, शिक्षा के वैश्वीकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू रहा है। एनईपी 2020 देश में शिक्षा और सीखने की बदलती गतिशीलता को संबोधित करने के लिए भारत सरकार द्वारा विकसित एक व्यापक नीति ढांचा है। नीति का लक्ष्य पारंपरिक इनपुट–आधारित दृष्टिकोण पर परिणाम–आधारित दृष्टिकोण को प्राथमिकता देकर शिक्षा प्रणाली को बदलना है। इसके अलावा, शिक्षा का वैश्वीकरण और एनईपी 2020 का परिणाम–आधारित शिक्षा ढांचा उच्च शिक्षा में नवाचार और रचनात्मकता को बढ़ावा देता है। संस्थानों को पारंपरिक कक्षा व्याख्यानों से परे नई और नवीन शिक्षण विधियों को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह नीति शिक्षण, सीखने और मूल्यांकन में प्रौद्योगिकी के एकीकरण को भी बढ़ावा देती है, जो छात्रों को डिजिटल युग के लिए तैयार करने के लिए आवश्यक है। शिक्षा के वैश्वीकरण के सबसे महत्वपूर्ण प्रभावों में से एक दुनिया के विभिन्न हिस्सों से सर्वोत्तम प्रथाओं और नीतियों को अपनाना है। एनईपी 2020 फिनलैंड, जापान और सिंगापुर सहित विभिन्न देशों के शिक्षा ढांचे से प्रेरणा लेता है। परिणाम–आधारित शिक्षा मॉडल को अपनाकर, एनईपी 2020 वैश्विक शिक्षा रुझानों के साथ संरेखित होता है जो रटने और याद करने के बजाय कौशल विकास और व्यावहारिक सीखने को प्राथमिकता देता है।

उच्च शिक्षा में एनईपी 2020 के परिणामः पहचान और उपलब्धि

कुल मिलाकर, 2020 की एनईपी से सीखने के लिए अधिक समग्र, समावेशी और अनुसंधान–उन्मुख दृष्टिकोण को बढ़ावा देकर भारत में उच्च शिक्षा पर परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ने की उम्मीद है। इससे शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने, नवाचार को बढ़ावा देने और देश में अधिक जीवंत और गतिशील उच्च शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की उम्मीद है। उच्च शिक्षा पर 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) का प्रभाव मान्यता और उपलब्धि के क्षेत्रों में देखा जा सकता है। समग्र और समावेशी शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देने पर ध्यान देने के साथ, इस नीति ने भारत में उच्च शिक्षा को समझने और वितरित करने के तरीके में महत्वपूर्ण बदलाव लाए हैं। नीति उच्च शिक्षा में प्रौद्योगिकी के महत्व को भी पहचानती है, और शिक्षण और सीखने में प्रौद्योगिकी के अधिक एकीकरण का आह्वान करती है। इससे छात्रों के सीखने के अनुभव में वृद्धि होने और शिक्षा को अधिक सुलभ और किफायती बनाने की उम्मीद है। एनईपी की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता उच्च शिक्षा में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करना है। नीति आर्थिक वृद्धि और विकास को आगे बढ़ाने में अनुसंधान के महत्व को पहचानती है, और अनुसंधान के बुनियादी ढांचे और सुविधाओं में निवेश बढ़ाने का आह्वान करती है। इससे देश में एक अधिक जीवंत अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र तैयार होने की उम्मीद है, जो शीर्ष प्रतिभा को आकर्षित करेगा और शिक्षा और अनुसंधान की गुणवत्ता को बढ़ाएगा। एनईपी के प्रमुख पहलुओं में से एक बहु–विषयक शिक्षा पर जोर देना है, जिसका उद्देश्य विभिन्न विषयों के बीच पारंपरिक सिलोस को तोड़ना और सीखने के लिए अधिक एकीकृत दृष्टिकोण को बढ़ावा देना है। इससे छात्रों को व्यापक दृष्टिकोण विकसित करने और तेजी से बदलते नौकरी बाजार के लिए प्रासंगिक कौशल हासिल करने में मदद मिलने की उम्मीद है। एनईपी उच्च शिक्षा संस्थानों में अधिक स्वायत्तता और जवाबदेही को बढ़ावा देना भी चाहता है। इसमें एक राष्ट्रीय उच्च शिक्षा नियामक प्राधिकरण की स्थापना का प्रस्ताव है, जो उच्च शिक्षा संस्थानों

के लिए मानक और दिशानिर्देश निर्धारित करने और उनके प्रदर्शन की निगरानी के लिए जिम्मेदार होगा। इससे यह सुनिश्चित होने की उम्मीद है कि संस्थान उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करें और अपने हितधारकों के प्रति जवाबदेह हों।

विश्लेषण

शिक्षार्थी और राजनीतिक अर्थव्यवस्था की कल्पना

यह नीति ऐसे सर्वांगीण व्यक्तियों के विकास में शिक्षा के महत्व पर जोर देती है जो समाज और अर्थव्यवस्था में योगदान दे सकें। इसका उद्देश्य चरित्र निर्माण, संज्ञानात्मक विकास और 21वीं सदी के कौशल के अधिग्रहण पर ध्यान केंद्रित करके व्यस्त, उत्पादक नागरिक बनाना है। यह नीति कार्यबल के उत्पादक सदस्य बनने के लिए व्यक्तियों को ''रोजगार योग्य'' होने और एफएलएन प्राप्त करने की आवश्यकता पर प्रकाश डालती है। यह परिप्रेक्ष्य शिक्षा के अर्थशास्त्र में निहित है, जो सीखने को व्यक्तियों को अधिक विपणन योग्य और आर्थिक रूप से मूल्यवान बनाने के साधन के रूप में देखता है। यह नीति आधुनिक बाजार में शारीरिक श्रम की तुलना में संज्ञानात्मक और सामाजिक–भावनात्मक कौशल को महत्व देने की दिशा में बदलाव को भी पहचानती है। हालाँकि, एक चिंता है कि विशेषज्ञता और मल्टीटास्किंग पर ध्यान केंद्रित करने के परिणामस्वरूप व्यक्ति किसी विशिष्ट क्षेत्र में गहरी विशेषज्ञता विकसित करने के बजाय ''सभी ट्रेडों के विशेषज्ञ'' बन सकते हैं। इसके अतिरिक्त, नीति मानती है कि कुशल व्यक्तियों के लिए नौकरी के पर्याप्त अवसर होंगे, लेकिन जरूरी नहीं कि ऐसा हो, क्योंकि वर्तमान में सार्वजनिक क्षेत्र में बड़ी संख्या में नौकरी की रिक्तियां हैं। कुल मिलाकर, नीति स्पष्ट रूप से संज्ञानात्मक और सामाजिक–भावनात्मक कौशल पर निर्भरता की दिशा में अर्थव्यवस्था के परिवर्तन का समर्थन करती है, साथ ही शारीरिक और मानसिक श्रम के बीच मौजूदा पदानुक्रम को भी मजबूत करती है।

परिणाम–आधारित मूल्यांकन, शिक्षक की कल्पना और सार्वजनिक प्रकटीकरण

शिक्षा जनता के लिए पारदर्शी और सुलभ हो। खुले प्रकटीकरण की प्रक्रिया जवाबदेही को बढ़ावा देने में मदद करती है और शैक्षणिक संस्थानों और जनता के बीच विश्वास पैदा करती है। यह हितधारकों को शिक्षा की गुणवत्ता का आंकलन करने और उन क्षेत्रों की पहचान करने का अवसर भी प्रदान करता है जिनमें सुधार की आवश्यकता है। संक्षेप में, परिणाम–आधारित मूल्यांकन, शिक्षक कल्पना और सार्वजनिक प्रकटीकरण एक संपन्न शिक्षा प्रणाली के आवश्यक तत्व हैं। वे यह सुनिश्चित करने के लिए हाथ से काम करते हैं कि छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले और शिक्षकों को प्रभावी शिक्षण रणनीतियों को नया करने और विकसित करने के लिए जगह दी जाए। इसके अतिरिक्त, खुला प्रकटीकरण जवाबदेही और पारदर्शिता को बढ़ावा देता है, जो शैक्षणिक संस्थानों और जनता के बीच विश्वास बनाने में महत्वपूर्ण है इसलिए, यह सुनिश्चित करने के लिए कि शिक्षा बड़े पैमाने पर छात्रों और समाज की जरूरतों को पूरा करती रहे, इन तत्वों पर और अधिक जोर देना और विकसित करना आवश्यक है। परिणाम–आधारित मूल्यांकन, शिक्षकों की रचनात्मक सोच और जनता के लिए खुला प्रकटीकरण शिक्षा प्रणाली में तीन महत्वपूर्ण तत्व हैं जिन पर जोर देने और आगे विकसित करने की आवश्यकता है। छात्रों के प्रदर्शन और उपलब्धियों के आधार पर उनका मूल्यांकन करने की प्रक्रिया शिक्षा का एक आवश्यक पहलू है, क्योंकि यह उनकी प्रगति की स्पष्ट समझ प्रदान करती है और उन क्षेत्रों की पहचान करने में मदद करती है जिनमें सुधार की आवश्यकता है। हालाँकि, शिक्षण के प्रति शिक्षकों के कल्पनाशील और नवीन दृष्टिकोण के महत्व को पहचानना भी आवश्यक है। शिक्षकों को रचनात्मक रूप से सोचने और अपने छात्रों की सीखने की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रभावी शिक्षण रणनीतियाँ विकसित करने की स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। नीति के लिए आवश्यक है कि मानकीकृत परीक्षण परिणामों को सार्वजनिक किया जाए, लेकिन यह हितधारकों को सूचित करने और स्कूलों को जवाबदेह बनाने के लिए छात्रों की गुमनामी की भी रक्षा करता है। हालाँकि, निगरानी के लिए मूल्यांकन पर निर्भर रहने से स्कूलों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ सकती है और छात्रों का मूल्यांकन, निगरानी और दंडित करने का विचार कायम रह सकता है। हालांकि मानक तय करना एक अच्छा विचार लग सकता है, लेकिन यह इस तथ्य को नजरअंदाज करता है कि भारत की शिक्षा प्रणाली असमान है, जिसमें विभिन्न स्कूलों के लिए अलग–अलग संसाधन उपलब्ध हैं। यह नीति सीखने के संकट

पर 2017 विश्व बैंक की रिपोर्ट के समान है, लेकिन यह देशों और क्षेत्रों के बीच मतभेदों को नजरअंदाज करती है। नीति एक साधनवादी दृष्टिकोण अपनाती है, शिक्षा को आर्थिक लाभ के लिए एक उपकरण के रूप में देखती है और अन्य कौशलों पर परीक्षण परिणामों को प्राथमिकता देती है। यह दृष्टिकोण उस चीज को महत्व देता है जिसे मापा और रिकॉर्ड किया जा सकता है, जो इस विचार को पुष्ट करता है कि परिणाम गुणवत्ता का माप हैं। हालाँकि, यह दृष्टिकोण सहयोग, वैयक्तिकरण, विश्वास–आधारित व्यावसायिकता और परिणामों की समानता पर प्रतिस्पर्धा, मानकीकरण और परीक्षण–आधारित जवाबदेही पर भी जोर देता है। अंततः, यह नीति एक राजनीतिक विकल्प है जो विकल्पों के बजाय परिणामों को प्राथमिकता देती है।

निष्कर्ष

ओबीई के प्रमुख लाभों में से एक इसकी छात्र सहभागिता और प्रेरणा को बढ़ावा देने की क्षमता है। अपेक्षित सीखने के परिणामों को स्पष्ट रूप से संप्रेषित करने से, छात्रों को इस बात की बेहतर समझ प्राप्त होती है कि उनसे क्या अपेक्षा की जाती है और वे अपनी सीखने की यात्रा का स्वामित्व ले सकते हैं। यह उन्हें सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए सशक्त बनाता है, जिससे उच्च स्तर की प्रेरणा और जुड़ाव प्राप्त होता है। इसके अलावा, ओबीई एक शिक्षार्थी–केंद्रित दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है जहां छात्र अपने स्वयं के सीखने के लक्ष्य निर्धारित करने और अपनी प्रगति का मूल्यांकन करने में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं। यह स्व–निर्देशित शिक्षण दृष्टिकोण न केवल स्वायत्तता और स्वतंत्रता को बढ़ावा देता है बल्कि छात्रों को आजीवन सीखने की आदतें विकसित करने के लिए भी प्रोत्साहित करता है। एनईपी 2020 आजीवन सीखने के महत्व को पहचानता है और इसका उद्देश्य निरंतर सीखने की संस्कृति बनाना है, जिससे ओबीई इस उद्देश्य को प्राप्त करने में एक मूल्यवान उपकरण बन सके। परिणाम–आधारित शिक्षा (ओबीई) के निष्कर्ष राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के संदर्भ में महत्व प्राप्त कर रहे हैं, खासकर उच्च शिक्षा के क्षेत्र में। ओबीई, एक छात्र–केंद्रित दृष्टिकोण जो सीखने के परिणामों को परिभाषित करने और मापने पर केंद्रित है, एनईपी में उल्लिखित उद्देश्यों और सिद्धांतों के साथ संरेखित है। यह संरेखण महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक समग्र और व्यापक शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता पर जोर देता है जो छात्रों को 21वीं सदी की चुनौतियों के लिए तैयार करता है। एनईपी 2020 के तहत छात्रों के बीच आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और समस्या–समाधान कौशल को बढ़ावा देने पर जोर दिया गया है। ओबीई शिक्षण से सीखने पर ध्यान केंद्रित करके इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है। यह शिक्षकों को प्रत्येक पाठ्यक्रम या कार्यक्रम के लिए वांछित सीखने के परिणामों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने और छात्रों को उन परिणामों को प्राप्त करने में मदद करने के लिए उचित मूल्यांकन और सीखने के अनुभवों को डिजाइन करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इसके अतिरिक्त, ओबीई विभिन्न क्षेत्रों में अंतःविषय शिक्षा और ज्ञान के एकीकरण को प्रोत्साहित करता है। यह दृष्टिकोण अवधारणाओं की समग्र समझ को बढ़ावा देता है और छात्रों को विभिन्न विषयों के बीच संबंध बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। एनईपी 2020 भी अंतःविषय शिक्षा के महत्व को पहचानता है और विश्वविद्यालयों को लचीले और बहु–विषयक कार्यक्रम पेश करने के लिए प्रोत्साहित करता है। ओबीई एक ऐसा ढांचा प्रदान करके इस दृष्टिकोण को पूरा करता है जो अंतर–विषयक शिक्षा और सहयोग को प्रोत्साहित करता है। ओबीई का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू कौशल विकास पर इसका ध्यान केंद्रित करना है। एनईपी 2020 छात्रों को महत्वपूर्ण सोच, समस्या–समाधान, संचार और सहयोग सहित 21वीं सदी के कौशल से लैस करने की आवश्यकता पर जोर देता है। ओबीई इन कौशलों को पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए एक संरचित ढांचा प्रदान करता है और यह सुनिश्चित करता है कि छात्रों को उनका अभ्यास करने और विकसित करने के पर्याप्त अवसर मिले। यह एनईपी के सर्वांगीण व्यक्तियों को तैयार करने के दृष्टिकोण के अनुरूप है जो तेजी से बदलती दुनिया की मांगों को पूरा करने के लिए तैयार हैं।

सन्दर्भ सूची

1. भारद्वाज, ए. (2021). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: परिवर्तन और चुनौतियाँ, *शिक्षा विमर्श,* 23(2), 7–18।

2. कुमार, एस. एवं शर्मा, आर. (2022). परिणाम आधारित शिक्षाः भारतीय संदर्भ में एक विश्लेषण, *शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका,* 15(3), 45–60।
3. Ministry of Education. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. Government of India. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_Hindi_0.pdf, Assess on 20/04/2024.
4. पाण्डेय, एन. (2023). नई शिक्षा नीति में परिणाम आधारित शिक्षा का महत्व. भारतीय शिक्षा समीक्षा, 12(1), 22–35.
5. Singh, R., & Mishra, P. (2021). Outcome-based education: A paradigm shift in Indian higher education, *Journal of Education and Practice,* 12(15), 8-17.
6. वर्मा, एम. (2022). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और कौशल विकासः एक समीक्षा, *कौशल विकास समीक्षा,* 7(4), 112–125.
7. कौशिक, ए. (2018) भारत में सीखने के परिणामों को मापना, संगोष्ठी अंक 706. कुमार, के.(1992). शिक्षण के लायक क्या है? ओरिएंट लॉन्गमैन।

——==00==——